IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नारी उत्थान में महात्मा गांधी जी का योगदान

राज कुमार

असिसटैन्ट प्रोफैसर

इतिहास विभाग

गुरूनानक खालसा कालेज

अबोहर, पंजाब

नारी भारतीय समाज में मां के रूप में चिरकाल से स्थापित है। शास्त्रों में भी नारी का स्थान पूजनीय है। पुरूष प्रधान भारतीय समाज में नारी उत्थान के लिए समय–समय पर अनेकों महापुरूषों ने प्रयत्न किए हैं। महात्मा गांधी जी आधुनिक समय में ऐसे ही महापुरूष हुए हैं जिन्होंने नारी उत्थान के कार्यों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पुरूष प्रधान समाज वंश वृद्धि और पुत्र प्राप्ति की कामना में इतना अन्धा हो जाता है कि वे भूल जाता है कि उसी पुरूष की उत्पत्ति का माध्यम नारी ही है। गांधी जी अपने पूरे जीवन में नारी सुधार के लिए आंदोलनरत रहे। गांधी जी पुरूष और नारी के समान अधिकारों के पक्षधर रहे। वह दहेज प्रथा के विरोधी थे उनके विचार में धन के लालच में किया गया विवाह , विवाह नहीं होता यह एक कुकृत्य है और दहेज मांगने वाले हर, व्यक्ति को विवाह के अयोग्य करार दे देना चाहिए। वे नारी शिक्षा, स्वतंत्रता, समानता के अधिकार देने की हमेशा वकालत करते रहे। गांधी जी के शब्दों में , ''नारी ईश्वर यानी परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। वह अहिंसा की अवतार है तथा अपने धार्मिक आग्रहों के परिप्रेक्ष्य में पुरूष जाति से कोसों आगे हैं।''

नारी उत्थान और गांधी जी का योगदान'– हमारी संस्कृति के आयाम बहुत अद्भुत हैं। जहां एक और नारी को पूजनीय और ममतामयी माना जाता है वही दूसरी ओर उसे भोग्या भी समझा जाता है। मानवता के लिए शर्मनाक स्थिति तब बन जाती है जब उसे इंसान ही नही समझा जाता। नारी के आजाद अस्तित्व को भी नकार दिया जाता है। गांधी जी ने स्त्रियों की इस स्थिति का गहन आंकलन किया। गाँधी जी का कहना था पुत्र प्राप्ति के लिए हम इतने नेत्रहीन हो जाते हैं और यह भी भूल जाते हैं कि पुत्र की पैदाईश के लिए सबसे अहम योगदान

स्त्री का ही होता है। अगर स्त्री ही नहीं होगी तो पुत्र कहां से प्राप्त होगा। आज के समाज में नारी की विरोधता इस कदर बढ़ गई है कि स्त्री जाति समाप्ति की ओर जा रही है। पुरूष प्रधान समाज पुत्र के लिए इतना अन्धा हो गया है कि स्त्री का सम्मान करना भी भूल गया है। परन्तु समाज को यह नहीं मालूम कि आज भी लड़कियां पूरे संसार में पुरूषों के बराबर देश का नेतृत्व करती आ रही हैं। मुट्ठीभर लोग स्त्रियों के प्रति नकारात्मक सोच रखते हैं, जबकि हमारे संविधान ने औरत को पुरूषों के बराबर अधिकार दिए हैं। हम सब का यह प्रयास होना चाहिए कि लड़कियों एंव स्त्रियों को बराबर का सम्मान और अधिकार दें ताकि स्त्रियां कदम से कदम मिलाकर पुरूषों के बराबर पैरों पर खडी हो सकें।

महात्मा गांधी जी अपने पूरे आंदोलन स्त्रियों के सुधार की बात करते हैं और ऐसे समाजिक नियमों की बात करते हैं जो पुरूषों द्वारा बनाए गए हैं। यह सारे नियम महिलाओं के विरूद्ध है। महिलाओं की यह हालत न केवल भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि पश्चिमी देश की स्त्रियों को भी अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए लंबा संघर्ष करना पडा है। इस संघर्ष के परिणाम स्वरूप ही उन्हें पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त हुए हैं। हमारे देश की नारियों ने पुरूषों का इतना विरोध नही किया जितना पश्चिमी देशों की महिलाओं ने किया है। इसलिए भारतीय नारी अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए पश्चिमी देशों की महिलाओं से पिछड़ गई हैं। दूसरा कारण यह है कि भारतीय समाज में पुरूषों और स्त्रियों के लिए जितने भी नियम बनाए गए हैं उनमें से स्त्रियों को परूषों के मुकाबले अधिक नियमों का पालन करना पडता है। इस विषय में महात्मा गांधी जी ने कहा है कि ''हिन्दुत्व प्रत्येक प्राणी को इस बात के लिए खुली छूट प्रदान करता है कि वह अपने आत्म अनुभूति की प्राप्ति के लिए अपना मार्ग खुद तय करें।''

महात्मा गांधी जी का मत है कि स्त्रियों की यह स्थिति विषम परिस्थितियों की वजह से हुई हैं। जबकि स्त्री और पुरूष दोनों में एक ही आत्मा का वास है। स्त्री और पुरूष दोनें की भूमिका एक दूसरे के पूरक के रूप में होती है। परन्तु पुरातन वर्षों में पुरूष स्त्रियों पर अपना अधिकार समझते थे। इस स्वरूप महिलाओं की दशा बहुत ही दयनीय होती चली गई एवं पुरूष की श्रेष्ठता को ही सत्य स्वीकार करने लगीं तथा स्त्रियों को पुरूषों के रहमों करम पर छोड दिया गया। लेकिन उस समय के सन्तों एवं ऋषियों ने स्त्रियों की समान भूमिका को पहचाना और कहा कि स्त्रियों को भी पुरूषों के बराबर समानता, स्वतन्त्रता एवं आजादी का अधिकार है।

गांधी जी भी स्त्री जाति को सामाजिक कार्यों में भाग लेने के लिए उत्साहित करते रहे। गांधी जी स्त्रियों की शिक्षा की महत्वपूर्ण मानते थे और कहते थे कि भारत का भविष्य स्त्री की गोद में है। एक शिक्षित नारी ही शिक्षित समाज को जन्म दे सकती है। तुम (स्त्री) भारत के बच्चों को ऐसी शिक्षा दे सकती हो कि वह निडर एवं बहादुर, स्त्री –पुरूष बनें। गांधी जी ने महिलाओं को गृहणी बनने के साथ समाज के जटिल कार्यों को करने के लिए

प्रोत्साहित किया । उनका मानना था कि राजनीतिक कार्यों की अपेक्षा समाज सुधार का कार्य कहीं अधिक मुश्किल है। इस कठिन कार्य को बुद्धिमान एवं चेतनशील स्त्रियां ही भली भांति कर सकती हैं।

गांधी जी का विचार था कि देश के विकास में अगर नारी को ना जोड़ा गया तो देश के विकास की परिकल्पना साकार नहीं हो सकेगी। इसलिए वह सदैव महिलाओं के अधिकारों के महिला को समाज की निर्माता कह सकते हें। प्राचीन काल में कानून बनाने का काम पुरूषों के हाथ में रहा है। इसलिए पुरातन काल में पुरूषों द्वारा बनाए गए कानूनों का स्त्रियों को कोई लाभ नहीं हुआ। इसलिए मैं चाहता हूं ऐसे कलंकों को जो स्त्री को सामान अधिकार नहीं दे सकते मिटा देना चाहिए। अगर उस समय स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार दिए जाते तो नारी पुरूषों के मुकाबले अधिक शक्तिशाली हो सकती थी।

गांधी जी स्त्रियों को स्वंतत्र जीवन के लिए आमंत्रित करते हैं। उनके अनुसार नारी का अधिकतम समय घर के जरूरी काम काज में नहीं लगता बल्कि अपने पति की सेवा में व्यतीत होता है। उनके विचार में यह नारी की यह दशा गुलामी की निशानी है। अब समय आ गया है कि महिलाओं को घरेलू गुलामी से बाहर निकलकर ओर कामों में भी पुरूषों का हाथ बंटाना चाहिऐ। इसी प्रकार हमारा समाज एंव देश अधिक तरक्की से आगे बढ़ेगा।

गाधी जी दहेज प्रथा के भी विरूद्ध थे। इस भयंकर विकृति की वजह से योग्य कन्याएँ विवाह से वंचित रह जाती थीं। महात्मा गाधी जी का मत था कि धन के लालच में किया गया विवाह नहीं है। यह एक नीच कार्य है। समाज में स्त्री को ऊँचा उठाने के लिए इस बुरी दहेज प्रथा को समाप्त करना होगा। महात्मा गांधी जी का कहना था कि जब तक समाज में स्त्रियों को दंडित एवं प्रताड़ित करने का सिलसिला जारी रहेगा तब तक संपूर्ण समाज की उन्नति नहीं हो सकती। गाधी जी ने दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए कुछ सुझाव दिए हैं। जिनके अनुसार कन्याओं के माता पिता अपनी कन्याओं को लड़कों के समान शिक्षित करें, चुनाव के क्षेत्र में भी रूचि दिखाऐं। ताकि पुरूषों की सोच को बदला जा सके और दहेज प्रथा एंव अन्य विकृतियों को समाज से निकाला जा सके। अतः एक ऐसा भयमुक्त समाज बनाना चाहिए जो कि दहेज लोभियों की आत्मा को झंजोड दें।

प्राचीन काल की स्त्री के मुकाबले आज की स्त्री अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हैं। शिक्षा के क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्रों में वह अपना अधिक योगदान दे रही हैं। महात्मा गांधी जी के द्वारा दी हुई स्त्री जागृति की दुलर्भ देन भारत के लिए आशीर्वाद है।

भारतीय महिलाओं की इस राष्ट्रीय चैतनता ने देश का मस्तक बहुत ऊँचा उठा दिया है। भारतीय समाज में महात्मा गांधी जी की बहुमुल्य देन है। महात्मा गांधी जी ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जिसकी नींव

समानता और शक्ति पर आधारित हो। इस उदेश्य की प्राप्ति के लिए यह जरूरी है कि पुरूष एवं स्त्री के बीच समानता के सभी तत्व सुनिश्चित हो। महात्मा गांधी जी के अनुसार नारी ईश्वर यानी परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट कृति है।''

अंत में हम कह सकते है कि महात्मा गांधी जी ने देश को आजाद करवाने के लिए अहम योगदान दिया था। लेकिन वो समाज में महिलाओं की समानता एवं स्वतंत्रता के अधिकार दिलाने के लिए पुरूष प्रधान समाज की इस भयानक विकृति के विरोध में बोलने से भी नहीं हिचकिचाए। जब जब उन्हें बोलने एवं लिखने का अवसर मिलता था, तब तब वह नारी की दयनीय हाल का वर्णन करते रहें। गांधी जी के अनुसार पुरूष प्रधान समाज को नारी के साकारात्मक अपनी अच्छा दृष्टिकोण अपनाना चाहिए एवं ऊँची सोच रखनी चाहिए, ताकि देश का विकास एवं तरक्की हो सके।

संदर्भ ग्रंथ एवं स्रोतों की सूची–

- महात्मा गांधी और उनकी महिला मित्र – गिरज कुमार
- महात्मा गांधी और औरत – आर. के. पाठी, चतुर्वेदी
- ळतमंज ॅवउमद व ि्दकपं इल ज्ञ्ण्ैण् ठींससं
- ळंदकीप वद ॅवउंद इल च्ण्ौीप श्रवेीप
- ॅवउमद इमीपदक डींजउं ळंदकीप इल ग्सममंदवत डवतजवदण
- दलित महिलाएँ, डॉ. मंजू सुमन
- गांधी एक अध्यन, सुरजीत कौर जौली
- गांधी एक अध्ययन, डॉ. सुरजीत कौर जौली
- महात्मा गांधी के विचार, आर.के. प्रभु एवं यूआर. राव